Hq – एक शिष्य होने की कीमत लूका १४:२५-३५ | 1

– Save This Page as a PDF–

एक शिष्य होने की कीमत

लूका १४:२५-३५

खुदाई: प्रभु ने बड़ी भीड़ से परिवार के बारे में क्या कहते हैं? यीशु की ओर से ऐसी कठोर बातें क्यों? इस संदर्भ में नफरत से उनका क्या मतलब है? एक क्रुस ले जाना? इस परिच्छेद में तीन उदाहरणों में से प्रत्येक मसीहा को अपना प्राथमिक प्रेम और वफादारी देने की आवश्यकता से कैसे संबंधित है? शिष्यत्व के बारे में येशुआ के अंतिम बिंदु के लिए नमक एक अच्छा सादृश्य कैसे है? अंतिम विश्लेषण में, राज्य के कौन से मूल्य सिखाए जाते हैं?

चिंतन: आपको कब एहसास हुआ कि यीशु का अनुसरण करना महंगा था? ऐसा कैसे? तब से क्या आपने कभी सोचा कि क्या लागत इसके लायक थी? आप किसके लिए मरेंगे? यीशु मसीह के साथ आपके रिश्ते की आज आपको क्या कीमत चुकानी पड़ रही है? आपको क्या चलता रहता है?

महान भोज के दृष्टांत के बाद यीशु के साथ यात्रा कर रही एक बड़ी भीड़ का दृश्य बदल जाता है। और एक विषय विश्वासी बनने से बदल कर शिष्य बनने की लागत गिनने पर आ जाता है। यह अनुच्छेद यीशु के मंत्रालय के उस दौर को दर्शाता है जब क्रूस की छाया बड़ी होने लगी थी। चूँकि कोई भी विवेकशील व्यक्ति लागत की गणना किए बिना मीनार नहीं बनाएगा या युद्ध में नहीं जाएगा, इसलिए किसी को भी शिष्यत्व की जिम्मेदारियों को हल्के में नहीं लेना चाहिए। मसीह का उद्देश्य भावी शिष्य को हतोत्साहित करना नहीं है, बल्कि आधे-अधूरे मन वाले शिष्य को इस प्रकार की शिष्यत्व के विनाशकारी परिणामों के प्रति जागृत करना है।

प्रत्येक विश्वासी एक शिष्य है। प्रभु का महान आदेश था सारी दुनिया में जाकर शिष्य बनाओ . . और उन्हें जो कुछ आज्ञा मैं ने तुम्हें दी है उसका पालन करना सिखाओ (मत्ती २८:१९-२०)। इसका मतलब है कि कलीसिया का मिशन और प्रचार का लक्ष्य शिष्य बनाना है। शिष्य वे लोग हैं जो विश्वास करते हैं, जिनका विश्वास उन्हें जीवित वचन की सभी आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। प्रेरितों की पुस्तक (६:१-२ और ७; ११:२६; १४:२० और २२; १५:१०) में शिष्य शब्द का लगातार विश्वासी के पर्यायवाची के रूप में उपयोग किया जाता है। दोनों शब्दों के बीच कोई भी अंतर पूरी तरह से कृत्रिम है। लेकिन इसमें कोई गलती न करें, शिष्य बनने की कीमत कोई आसान रास्ता नहीं है। लागत अधिक है, अधिकांश लोग जितना भुगतान करना चाहते हैं उससे कहीं अधिक।

Hq – एक शिष्य होने की कीमत लूका १४:२५-३५ | 2

एक शिष्य वह नहीं है जो केवल “अग्नि बीमा” खरीदता है, जो अप्रिय मृत्यु से बचने के लिए गाता है। विश्वासी वह है जिसका विश्वास समर्पण और आज्ञाकारिता में व्यक्त होता है। वह ऐसा व्यक्ति है जो मसीहा का अनुसरण करता है, वह व्यक्ति है जो निर्विवाद रूप से प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में मसीह के प्रति समर्पित है, वह व्यक्ति है जो एडोनाई को प्रसन्न करना चाहता है। जब शिष्य असफल होते हैं, तो वे क्षमा मांगते हैं और मसीह की महिमा करने के लिए आगे बढ़ना चाहते हैं। यही उनकी भावना और दिशा है।

पेरिया में यीशु के साथ बड़ी भीड़ यात्रा कर रही थी, और उन्होंने उनकी ओर मुड़कर कहा: यदि कोई मेरे पास आता है और पिता और माता, पत्नी और बच्चों, भाइयों और बहनों
– यहाँ तक कि अपने स्वयं के जीवन से भी घृणा नहीं करता है – तो ऐसा व्यक्ति मेरा नहीं हो सकता शिष्य। यहां नफरत शब्द एक भावना नहीं है, बल्कि चुनने या न चुनने का कार्य है (मलाकी १:२-३)। एक बेहतर अनुवाद यह होगा: कोई भी जो मेरे पास आता है लेकिन माता-पिता, पति/पत्नी, बच्चों, भाइयों और बहनों – हाँ, यहाँ तक कि अपने जीवन को भी जाने देने से इनकार करता है! – ऐसा व्यक्ति मेरा शिष्य नहीं हो सकता (लूका १४:२५-२६ संदेश)। इस श्लोक का विषय किसी के परिवार से अलगाव नहीं है, बल्कि शिष्यत्व की कीमत है; कुछ भी नहीं, पिता या माता या यहां तक कि अपने स्वयं के जीवन के लिए प्यार, एडोनाई और उनके मेशियाक के प्रति वफादारी से पहले नहीं आ सकता है।

यह भाषा इतनी गंभीर क्यों है? मसीहा यहाँ ऐसे आपत्तिजनक शब्दों का प्रयोग क्यों करता है? क्योंकि वह अप्रतिबद्ध लोगों को दूर भगाने और सच्चे शिष्यों को अपनी ओर खींचने के लिए उत्सुक है। वह नहीं चाहता कि आधे-अधूरे मन वाले लोग यह सोचकर धोखा खाएं कि वे स्वर्ग के राज्य में हैं। जब तक यीशु पहली प्राथमिकता नहीं है, उसे उसका उचित स्थान नहीं दिया गया है।



और जो कोई अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं
चलता, वह मेरा चेला नहीं हो सकता (लूका १४:२७)। जो पापियों के उद्धारकर्ता का शिष्य बनकर अपना जीवन खोने को तैयार नहीं है वह उसके योग्य नहीं है (मत्ती १०:३८-३९)। यीशु लोगों से उन्हें अपने दैनिक कार्यों की “करने योग्य” सूची में शामिल करने के लिए नहीं कहते हैं। हम सभी ने भक्तिपूर्ण उपदेशों को सुना है, जो इस अनुच्छेद को आध्यात्मिक बनाते हैं और इसका मतलब चिड़चिड़े बॉस से लेकर टपकती छत

Hq – एक शिष्य होने की कीमत लूका १४:२५-३५ | 3

तक सब कुछ है। लेकिन येशुआ के पहली सदी के दर्शकों के लिए क्रुस शब्द का मतलब यह नहीं था। इसने उन्हें दीर्घकालिक समस्याओं या कठिन बोझों की याद नहीं दिलायी। इससे कैल्वरी के मन में विचार भी नहीं आया, क्योंकि प्रभु अभी तक क्रूस पर नहीं गए थे और उन्हें समझ नहीं आया था कि वह ऐसा करेंगे। जब ईसा मसीह ने कहा कि अपना क्रूस उनके पास ले जाओ, तो उन्होंने यातना और मृत्यु के एक क्रूर साधन के बारे में सोचा। उन्होंने मानवजाति को ज्ञात सबसे कष्टदायक तरीके से मरने के बारे में सोचा। उन्होंने सड़क के किनारे क्रूस पर लटके हुए गरीब, निंदित अपराधियों के बारे में सोचा क्योंकि उन्होंने निस्संदेह कई लोगों को इस तरह से फांसी पर लटकाए हुए देखा था। वे समझ गए कि वह उन्हें अपने लिए मरने के लिए बुला रहा है।

बाइबल शहादत द्वारा मुक्ति की शिक्षा नहीं देती। यीशु अपने शिष्यों को उसके लिए खुद को मारने की कोशिश करने की सलाह नहीं दे रहे थे। जीवन का राजकुमार जीवन के एक पैटर्न की बात कर रहा था। वह बस इतना कहता है कि सच्चे विश्वासी मृत्यु के सामने भी पीछे नहीं हटते।

मिश्ना में आध्यात्मिक लागत-लाभ विश्लेषण भी सिखाया जाता है। “एक मिट्ज्वा (आज्ञा) के प्रतिफल के विरुद्ध उसके नुकसान के बारे में, और उसके नुकसान के विरुद्ध एक अपराध के प्रतिफल के बारे में सोचो” (एवोट २:१)। भाव यह है: आज्ञा का पालन करने की अपेक्षाकृत छोटी लागत की तुलना इसे पूरा करने से प्राप्त महान और अनंत लाभ से करें; इसी तरह, किसी आदेश का उल्लंघन करने से प्राप्त क्षणभंगुर इनाम की तुलना उसकी महान और अनंत कीमत से करें।

बाइबल कहती है कि यदि आप येशुआ में विश्वास करते हैं तो आपकी कुछ सीमित लागतें होंगी, पाप के क्षणभंगुर सुखों को छोड़कर (इब्रानियों ११:२५), लेकिन आप एडोनाई के साथ अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे (देखें एमएस – विश्वासी की अनंत सुरक्षा), ए अनंत मूल्य का लाभ। दूसरी ओर, यदि आप यीशु को अस्वीकार करते हैं तो आपको कुछ सीमित लाभ होंगे (दुनिया और शैतान जो भी खुशी दे सकते हैं उसका आनंद लेना)। लेकिन आप नरक में जायेंगे और ईश्वर और सभी अच्छाइयों से हमेशा के लिए अलग हो जायेंगे, जिसकी कीमत अनंत होगी। जैसा कि जिम इलियट, जो इक्वाडोर के हुआओरानी लोगों को ईसाई धर्म में प्रचार करने के प्रयास में शहीद हो गए थे, ने १९५६ में अपने अंतिम दिनों में लिखा था, “वह मूर्ख नहीं है जो उस चीज़ को छोड़ देता है जिसे वह अपने पास नहीं रख सकता। . . वह हासिल करने के लिए जिसे वह खो नहीं सकता।”

तो इतने कम रब्बी (या अन्य धर्मों के अधिकारी) विश्वासी क्यों हैं? एक कारण यह है कि अधिकांश ने यहूदी दृष्टिकोण से प्रस्तुत सुसमाचार को कभी नहीं सुना है। लेकिन भले ही सुसमाचार को अच्छी खबर के रूप में समझा जाता है, न कि अन्यजातियों के धार्मिक या यहूदी धर्म के बुतपरस्त संशोधन के रूप में, दूसरा कारण यह है कि रब्बी (और अन्य धर्मों के अधिकारी) आमतौर पर इसकी कीमत चुकाने को तैयार नहीं होते हैं – जो कि उनका मामला यहूदी (या अन्य धर्मों) समुदाय में उन्हें दिए गए सम्मान

Hq – एक शिष्य होने की कीमत लूका १४:२५-३५ | 4

और विशेषाधिकारों को अपमान और शर्म के बदले, एक बहिष्कृत या मेशुम्मद की स्थिति के लिए बदलना होगा, (धर्मत्यागी, शाब्दिक रूप से, जो नष्ट हो गया है)। तीसरा कारण यह है कि उन्हें फ़ायदों का सही-सही अंदाज़ा नहीं है। यहां तक कि स्वर्ग-नरक के सवालों के अलावा, कुछ ही लोग ईश्वर, यहूदी मेशियाक, यहूदी लोगों और बाकी मानवता के प्रति वफादार एक नए और सच्चे यहूदी धर्म को आकार देने में मदद करने के पुरस्कारों की कल्पना कर सकते हैं। उनके लिए विश्व इतिहास की दो महान धाराओं (इफिसियों २:१४) को एकजुट करने के लिए अपने रब्बी प्रशिक्षण को समर्पित करने के उत्साह की कल्पना करना कठिन है, जो दो हजार वर्षों से अलग हो गए हैं।

एक रब्बी जिसने इस दृष्टिकोण को समझा, और तदनुसार लागत और लाभों का पुनर्मूल्यांकन किया, वह टारसस का शाऊल था। उन्होंने लिखा: लेकिन जो चीजें मेरे लिए फायदे [फायदे] हुआ करती थीं, मसीहा की वजह से मैं सर्वोच्च मूल्य [अनंत लाभ] की तुलना में नुकसान [एक लागत, या अधिकतम एक सीमित लाभ] पर विचार करने लगा हूं। मसीहा येशुआ को मेरे प्रभु के रूप में जानने का। यह उसके कारण था कि मैंने मसीहा [अनंत लाभ] को प्राप्त करने के लिए सब कुछ त्याग दिया और इसे कचरा [अधिकतम एक सीमित लाभ, तुलना में बेकार] माना (फिलिप्पियों ३:७-८ सीजेबी)।

फिर, दो दृष्टांतों का उपयोग करते हुए, यीशु ने सिखाया कि शिष्यत्व में योजना और बलिदान शामिल होना चाहिए। मान लीजिए आप में से कोई एक टावर बनाना चाहता है। क्या आप पहले बैठकर इसकी लागत नहीं गिनेंगे कि आपके पास इसे पूरा करने के लिए पर्याप्त धन है या नहीं? क्योंकि यदि तू नेव डाले, और उसे पूरा न कर सके, तो जो कोई उसे देखेगा, वह यह कह कर तुझे ठट्ठों में उड़ाएगा, कि इस मनुष्य ने बनाना तो आरम्भ किया, परन्तु पूरा न कर सका। (लूका १४:२८-३०) बिल्डर ने तब तक काम शुरू नहीं किया जब तक उसने लागत पर विचार नहीं कर लिया।

या मान लीजिए कि एक राजा दूसरे राजा के विरुद्ध युद्ध करने जा रहा है। क्या वह पहले बैठकर विचार नहीं करेगा कि क्या वह दस हजार आदमियों के साथ उस का विरोध करने में सक्षम है जो बीस हजार के साथ उसके विरुद्ध आ रहा है? यदि वह सक्षम नहीं है, तो वह एक प्रतिनिधिमंडल भेजेगा जबकि दूसरा अभी बहुत दूर है और शांति की शर्तें मांगेगा। एक राजा जिसने दुश्मन के खिलाफ युद्ध की योजना बनाई थी, उसमें शामिल सभी बातों पर सावधानीपूर्वक विचार किया था और लागत पर विचार किए बिना मूर्खतापूर्वक संघर्ष में नहीं कूदा था। उसी तरह, लेकिन एक बार लागतों की गणना हो जाने और मसीह में विश्वास करने का निर्णय हो जाने के बाद, यीशु ने कहा कि तुममें से जो अपना सब कुछ नहीं छोड़ते, वे मेरे शिष्य नहीं हो सकते (लूका १४:३१-३३)।

बड़ी कुशलता से गुरु ने शिष्यत्व की कठिनाई को यह घोषित करके दूर कर दिया: नमक तभी तक अच्छा है जब तक उसमें नमकीनपन के गुण मौजूद हैं, लेकिन अगर वह अपना नमकीनपन खो देता है, तो उसे फिर से नमकीन कैसे बनाया जा सकता है? यह न तो मिट्टी

Hq – एक शिष्य होने की कीमत लूका १४:२५-३५ | 5

के लिए उपयुक्त है और न ही खाद के ढेर के लिए; इसका कोई मूल्य नहीं है और इसे बाहर फेंक दिया जाता है। शिष्यों के बारे में भी यही सच है। उनमें सच्चे शिष्यों की विशेषताएं होनी चाहिए – योजना बनाना और इच्छुक बलिदान – अन्यथा वे अप्रभावी हैं। “जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले” (लूका १४:३४-३५)। इसका मतलब किसी का उद्धार खोना नहीं है। यीशु जिस नमक के बारे में बात कर रहे थे वह मृत सागर से आया था, जिसका उपयोग न करने पर उसका नमकीनपन ख़त्म हो सकता था। लूका, रुआच हाकोडेश की प्रेरणा से, यह सादृश्य बनाता है कि हम उसके नाम की गवाही नहीं देते हैं, चाहे इसकी कोई भी कीमत क्यों न हो, हम अपनी प्रभावशीलता खो सकते हैं।

आस्था कोई प्रयोग नहीं, बल्कि आजीवन प्रतिबद्धता है। इसका अर्थ है प्रतिदिन क्रूस उठाना, बिना किसी हिचकिचाहट, बिना किसी अनिश्चितता और बिना किसी हिचकिचाहट के हर दिन मसीहा के लिए अपना सब कुछ दे देना। इसका मतलब है कि किसी भी चीज़ को जानबूझकर रोका नहीं गया है, किसी भी चीज़ को जानबूझकर उसके आधिपत्य से नहीं बचाया गया है, और किसी भी चीज़ को उसके नियंत्रण से हठपूर्वक नहीं रखा गया है। यह दुनिया के साथ संबंध को दर्दनाक रूप से तोड़ने (प्रथम युहन्ना २:१५-१७), भागने के रास्तों को सील करने, असफलता की स्थिति में सहारा लेने के लिए किसी भी प्रकार की सुरक्षा से खुद को मुक्त करने की मांग करता है। सच्चे विश्वासी जानते हैं कि वे मृत्यु तक मसीह के साथ आगे बढ़ रहे हैं। जब आप येशुआ हा-मेशियाच का अनुसरण करने के लिए साइन अप करते हैं तो ऐसा ही होता है। यही सच्ची शिष्यता का गुण है।